किस हाल में है कांटी थर्मल पावर स्टेशन

सम्राट कुमार



चार सौ पचास करोड़ रुपय की लागत से 1985 में स्थापित 220 मेगावाट क्षमता वाले कांटी थर्मल प्रबन्धन की उपेक्षापूर्ण नीति का शिकार होकर अपनी बदहाली पर आंसू बहा रहा है। स्थापना के महज छ: वर्षों तक अपनी क्षमता 220 मेगावाट से महज चंद मेगावाट पिछे उत्पादन कर रही थर्मल पावर की दोनों इकाइयों से आज क्षमता का चौथाई हिस्सा भी उत्पादन पूरा नहीं हो पा रहा है। किंसी न किसी बिमारी से ग्रसित थर्मल पावर की एक इकाई ही अब एकबार उत्पादन करती है। आय और उत्पादन की तुलना में अधिक लागत प्रतिमेगावाट उत्पादन से पावर स्टेशन शनै:-शनै: बदहाल होता जा रहा है।

लगभग 650 श्रम आपूर्ति के कमियों और 600 बोर्ड कर्मचारियों जिसमें अभियंता से लेकर महाप्रबन्धक तक़ शामिल है। इनके सहयोग से उक्त पावर स्टेशन का संचालन होता है। कर्मियों की लम्बी फौज के बावजूद थर्म पावर में उत्पादन कम होना और ज्यादतर बंद रहना, एक ही इकाई चलना काफी जटिल प्रश्न बना हुआ है। इस बावत विभागीय सूत्र बताते हैं कि बोर्ड द्वारा आवंटित प्रतिमाह रख रखाव का 14 लाख रुपये प्रबन्धन की लापरवाही, खाऊ-पकाऊ नीति के कारण अभियंता-ठेकेदार की गठजोड़ से अप व्यय का शिकार हो रहा है। उल्लेखनीय है कि 18 वर्ष पुराने उपकरणों से विद्युत उत्पादन कर रहे थर्मल पावर की ज्यादतर ठप होने की घटना बांल-मिल की खराबी या ट्यूब लिकेज के कारण होता है। बांल-मिल की ज्यादातरखराबी ठेकेदार-अभियंता गठजोड़ और घटिया किस्म की कोयले की आपूर्ति का होना होता है। उत्पादन के क्रम में कोयले की एक निश्चित मात्रा बांल-मिल में पिसने के लिए भेजा जाता है। इस कार्य का नियंत्रण अभियंता नियंत्रण कक्ष से करते हैं और ज्यादा मात्रा में कोयला बांल-मिल में भेजने से बांल मिल खराब हो जाता है। अभियंता की इस लापरवाही से वर्ष जनवरी, 2000 में इकाई संख्या एक के बांल-मिल में करीब आठ घंटे तक आग लगी थी। वहीं ट्यूब लिकेज के बावत सूत्र बताते है कि 280C मीटर लम्बे ट्यूब से जब 500 डिग्री सेल्सियस तापमान एवं 100 किलो ग्राम सेन्टीमीटर स्कवायर दबाव से भाप को जब टार्रवाइन घुमाने हेतु भेजा जाता है तो केनेटीक ऊर्जा से विद्युत ऊर्जा प्राप्त होता है। ऐसे में दवाब या ताप बढने पर ट्यूब लिकेज होता है। उल्लेखनीय है कि ट्यूब लिकेज के कारण बंद पावर स्टेशन को पुनः चालू करने में एन.एल.डी. तेल एवं एच.डी.ओ. तेल का खर्च्र करीब 16 लाख रुपये पड़ता है।उपकरणों की कागजी खरीद या रखरखाव की कागजी खर्च के कारण थर्मल की एक इकाई हमेशा बंद रहती हैं। ऐसे मामले में ठप यूनिट का उपकरण खोलकंर दूसरे इकाइ में लगा दिया जाता है और पुनः पहली इकाई को खराब दिखाकर रखरखाव के नाम पर लूट-खसोट की जाती है। कम उत्पादन के संबंध में बताया जाता है कि वर्ष 1992 में स्थानीय व्यक्तियों द्वारा विद्युत की नियमित आपूर्ति को लेकर आन्दोलन किया गंया था। उस क्रम में पावर स्टेशन को चालू राने के लिए आपूर्ति विद्युत लाईन का संपर्क भंग कर दिया गया था। परिणामत: टार्रवाइन रूक गया जिसे नचाने के लिए भेल के अभियंताओं को बुलाया गया। संयोगवश भूल से एक सूत से कंम टार्रबाइन अपने स्थान से हिल गया। इस कारण ज्यादा से ज्यादा 60 से 70 मेगावाट ही विद्युत उत्पादन होता है। लोड 80 से अधिक मेगावाट करने पर आर्रवाइन में कंपन्न उत्पन्न हो जाती है। बावजूद इसके पावर स्टेशन में अधिकधिक औसतन 30 से 35 मेगावाट विद्युत उत्पादन ही हो पाता है। समस्याओं से ज्यादा समस्या उत्पन्न करने वाले तत्व और व्यक्तियों पर सरकार या बोर्ड ने ध्यान नहीं दिया तो वह दिन दूर नहीं की थर्मल पावर अस्तित्व खतरे में पड़ जायेगा।

र सौ पचास करोड़ रुपय की लागत से 220 प्रबन्धन की

चा मेगावाट क्षमता वाले काटी पैसालात से 1986 में स्थापित नीति का शिकार होकर अपनी बदहाली पर आंसू बहा रहा है। स्थापना के महज छः वर्षों तक अपनी क्षमता 220 मेगावाट से महज चंद मेगावाट पिछे उत्पादन कर रही थर्मल पावर की दोनों इकाइयों से आज क्षमता का चौथाई हिस्सा भी उत्पादन पूरा नहीं हो पा रहा है। किसी न किसी बिमारी से ग्रसित थर्मल पावर की एक इकाई ही अब एकबार उत्पादन करती है। आय और उत्पादन की तुलना में अधिक लागत प्रतिमेगावाट उत्पादन से पावर स्टेशन शनैः-शनैः बदहाल होता जा रहा है।

लगभग 650 श्रम आपूर्ति के कमियों और 600 बोर्ड कर्मचारियों जिसमें अभियंता से लेकर

महाप्रबन्धक तक शामिल है। इनके सहयोग से उक्त पावर स्टेशन का संचालन होता है। कर्मियों की लम्बी फौज के बावजूद धर्मपावर में उत्पादन कम होना और ज्यादतर बंद रहना, एक ही इकाई चलना काफी जटिल प्रश्न बना हुआ है। इस बावत विभागीय सूत्र बताते हैं कि बोर्ड द्वारा आवंटित प्रतिमाह रख रखाव का 14 लाख रुपये प्रबन्धन की लापरवाही, खाऊ-पकाऊ नीति के कारण अभियंता- ठेकेदार की गठजोड़ से अप व्यय का शिकार हो रहा है। उल्लेखनीय है कि 18 वर्ष पुराने उपकरणों से विद्युत उत्पादन कर रहे थर्मल पावर की ज्यादतर ठप होने की घटना बांल-मिल की खराबी या ट्यूब लिकेज के कारण होता है। बांल-मिल की ज्यादातरखराबी ठेकेदार-अभियंता गठजोड़ और घटिया किस्म की कोयले की आपूर्ति का होना होता है। उत्पादन के क्रम में कोयले की एक निश्चित मात्रा बाल-मिल में पिसने के लिए भेजा

किस

हाल में है

जाता है। इस कार्य का नियंत्रण अभियंता नियंत्रण कक्ष से करते हैं और ज्यादा मात्रा में कोयला बांल मिल में भेजने से बांल मिल खराब हो जाता है। अभियंता की इस लापरवाही से वर्ष जनवरी, 2000 में इकाई संख्या एक के बॉल-मिल

में करीब आठ घंटे तक आग लगी थी। वहीं ट्यूब लिकेज

के बावत सूत्र बताते है कि 2800

कांटी थर्मल

पावर पावर स्टेशन

सम्राट कुमार

लम्बे से जब 500 डिग्री

सैल्सियस ताप दर्शन एवं 100 किलो ग्राम सेन्टीमीटर स्कवायर दबाव से भाष

तापमान

को जब टार्रवाइन घुमाने हेतु भेजा जाता है तो केनेटीक ऊर्जा से विद्युत ऊर्जा प्राप्त होता है। ऐसे में दवाब या ताप बढने पर ट्यूब लिकेज होता है। उल्लेखनीय है कि ट्यूब लिकेज के कारण बंद पावर स्टेशन को पुनः चालू करने में एन.एल.डी. तेल एवं एच.डी.ओ. तेल का खर्च करीब 16 लाख रुपये पड़ता है।उपकरणों

की कागजी खरीद या रखरखाव की कागजी खर्च के कारण थर्मल की एक इकाई हमेशा बंद रहती है। ऐसे मामले में ठप यूनिट का उपकरण खोलकर दूसरे इकाइ में लगा दिया जाता है और पुनः पहली इकाई को खराब दिखाकर रखरखाव के नाम पर लूट-खसोट की जाती है। कम उत्पादन के संबंध में बताया जाता है कि वर्ष 1992 में स्थानीय व्यक्तियों द्वारा विद्युत की नियमित आपूर्ति को लेकर आन्दोलन किया गया था। उस क्रम में पावर स्टेशन को चालू राने के लिए आपूर्ति विद्युत लाईन का संपर्क भंग कर दिया गया था। परिणामतः टार्रवाइन रूक गया जिसे नचाने के लिए भेल के अभियंताओं को बुलाया गया। संयोगवश भूल से एक सूत से कम टार्रबाइन अपने स्थान से हिल गया। इस कारण ज्यादा से ज्यादा 60 से 70 मेगावाट ही विद्युत उत्पादन होता है। लोड 80 से अधिक मेगावाट करने पर आर्रवाइन में कंपन्न उत्पन्न हो जाती है। बावजूद इसके पावर स्टेशन में अधिकधिक औसतन 30 से 35 मेगावाट विद्युत उत्पादन ही हो पाता है। समस्याओं से ज्यादा समस्या उत्पन्न करने. वाले तत्व और व्यक्तियों पर सरकार या बोर्ड ने ध्यान नहीं दिया तो वह दिन दूर नहीं की थर्मल पावर अस्तित्व खतरे में पड़ जायेगा। .